आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 13/05/2026; Accepted: 02/06/2026; Published: 28/06/2026

*लेख*

# "शिक्षक, शिक्षा और संस्कार: आत्ममंथन की आवश्यकता"

**सोनिया संदलस**
(सब्जेक्ट हेड)
पवार पब्लिक स्कूल ,हिन्जेवाडी(पुणे)

**सोनिया संदलस, "शिक्षक, शिक्षा और संस्कार: आत्ममंथन की आवश्यकता",** आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(291 -292)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21444002

**भाग 1**

आज हम अक्सर यह कहते दिखाई देते हैं कि नई पीढ़ी अपनी संस्कृति, अपने संस्कार और अपनी जड़ों से दूर होती जा रही है। हम बच्चों को दोष देते हैं, उनके व्यवहार पर प्रश्न उठाते हैं, उनकी सोच को आधुनिकता का प्रभाव कहकर नकार देते हैं।

परंतु क्या कभी हमने स्वयं से यह प्रश्न पूछा है कि जिन बच्चों को हम भविष्य कहते हैं, उनके वर्तमान को गढ़ कौन रहा है?

घर के बाद यदि किसी का सबसे अधिक प्रभाव बच्चे पर पड़ता है, तो वह शिक्षक होता है।

शिक्षक केवल विषय नहीं पढ़ाता, वह अपने व्यवहार, अपनी भाषा, अपने दृष्टिकोण और अपने व्यक्तित्व से भी शिक्षा देता है। बच्चे केवल किताबें नहीं पढ़ते, वे अपने शिक्षक को भी पढ़ते हैं।

आज शिक्षा एक व्यवस्था बनती जा रही है—

जहाँ सिलेबस पूरा करना, परिणाम लाना और औपचारिक जिम्मेदारियाँ निभाना ही मुख्य उद्देश्य बनता जा रहा है। शिक्षक भी अनेक दबावों से गुजर रहा है, यह सत्य है।

मानसिक थकान, कार्यभार, अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत संघर्ष—इन सबको नकारा नहीं जा सकता।

किन्तु इन सबके बीच कहीं न कहीं हम अपने उस मूल दायित्व से दूर होते जा रहे हैं, जिसके कारण शिक्षक को समाज में सबसे सम्मानित स्थान मिला था। जब एक शिक्षक प्रतिदिन विद्यालय केवल समय पूरा करने की भावना से आता है, जब उसके शब्दों में उत्साह की जगह थकान अधिक दिखाई देती है,जब वह स्वयं अपने कार्य से जुड़ाव महसूस नहीं करता—

तो उसका प्रभाव अनजाने में विद्यार्थियों पर भी पड़ता है। संस्कार केवल भाषणों से नहीं आते।

वे वातावरण से आते हैं। व्यवहार से आते हैं। और सबसे अधिक— उदाहरण से आते हैं।

यदि हम चाहते हैं कि बच्चे अपनी संस्कृति, अपने मूल्यों और अपनी संवेदनाओं से जुड़े रहें,

तो सबसे पहले हमें स्वयं से जुड़ना होगा।

क्योंकि आने वाली पीढ़ी हमारे शब्दों से कम और हमारे व्यक्तित्व से अधिक सीख रही है।

और शायद आज आवश्यकता दूसरों को दोष देने से अधिक, स्वयं से एक प्रश्न पूछने की है—

“क्या हम सच में अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं?”

**मिलते हैं अगले सत्र में...**

**तब तक आप इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करें।**

**********